मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 5.00
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
बिजली के बेटे
मनोज
कॉमिक्स

राम-रहीम और बिजली के बेटे
डबल सीक्रेट एजेण्ट $00\frac{1}{2}$ राम-रहीम
लेखक :- जमीर हुसैन ● चित्रांकन :- दिलीप कदम, विजय कदम ● त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट ●
छब्बीस जनवरी, यानी गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर, कर्नल राठौर ने अपने बंगले पर एक शानदार पार्टी का आयोजन किया था। उसमें सेना व पुलिस के उच्च अधिकारियों के अलावा शहर के अमीर और खास-खास लोग भी आये हुए थे। उस पार्टी में राम-रहीम भी नजर आ रहे थे। उन्हें प्रोफेसर भास्कर अपने साथ लेकर आये थे।
हैलो प्रोफेसर! क्या हाल है?
फाइन कर्नल!
अरे भाई, कुछ म्यूजिक-म्यूजिक शुरू करवाओ।
अभी लो!
म्यूजिक शुरू हो गया। उसी के मध्य—
चीयर्स!
चीयर्स!
प्रोफेसर! यह लड़के कौन हैं हमारे साथ इनका परिचय भी तो कराओ भाई!
आश्चर्य है! तुम इन्हें नहीं पहचानते! अरे यह राम-रहीम हैं...
...और तुम्हारी ही तरह बहादुर और देशभक्त हैं। खतरों से खेलना इनका शौक है। कई बार अपनी जान पर खेलकर यह दोनों कुख्यात अपराधियों को गिरफ्तार करवा चुके हैं। कई बार अन्तरिक्ष के खतरों से भी पृथ्वी की रक्षा कर चुके हैं।
ओह! तो यह हैं राम व रहीम। नाम तो मैंने इनका बहुत सुना है, पर मुलाकात का मौका आज ही मिला है...

...तुम दोनों से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई बहादुर लड़को।
हमें भी आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई कर्नल साहब।
उसी समय वहां एक व्यक्ति आया और कर्नल के कान में कुछ कहने लगा।
फुसफुसाहट!
उस व्यक्ति की बात सुनकर—
ठीक है, चलो। मैं चलता हूं।
प्रोफेसर! तुम राम-रहीम के साथ पार्टी का आनन्द उठाओ, मैं अभी आया।
ओ.के. कर्नल!
दस मिनट बाद कर्नल साहब वापस लौट आये।
क्या बात है कर्नल अंकल, आप कुछ परेशान नजर आ रहे हैं।
न...नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। मुझे कोई परेशानी नहीं है।
कर्नल अंकल, हम कम उम्र जरूर हैं, लेकिन लोगों के चेहरे पढ़ना हमें आता है। आपके चेहरे पर साफ साफ लिखा है कि आप बहुत परेशान हैं।
यह लड़के तो सचमुच बहुत तेज हैं। इन्होंने मेरा चेहरा पढ़ लिया है। क्यों न इस बार आपरेशन हैंथ पर इन्हें भेजा जाये। दोनों बहादुर भी हैं, चालाक भी हैं और प्रोफेसर के कहे अनुसार खतरों से खेलने में इन्हें डर भी नहीं लगता।
किस सोच में डूब गये कर्नल अंकल।
कुछ नहीं, तुम दोनों मेरे साथ आओ। मुझे तुमसे एक जरूरी काम है।
माफ करना प्रोफेसर! मैं इन दोनों को अपने साथ ले रहा हूं।
शौक से ले जाओ भाई! भला मुझे क्या एतराज हो सकता है।

कर्नल राम-रहीम को लेकर एक कमरे में पहुंचे।
अगर तुम दोनों पक्के देशभक्त हो तो खाओ देश की सौगन्ध और कहो कि जो राज मैं तुम्हें बताऊंगा, उसे तुम लोग किसी और को नहीं बताओगे।
यदि ऐसी बात है तो हम अपने प्यारे महान देश की सौगन्ध खाते हैं कर्नल अंकल कि आप जो भी राज हमें बतायेंगे, वह हमेशा हमारे दिल में दफन रहेगा।
अब मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं मिलेट्री सीक्रेट सर्विस का चीफ हूं, मुझे कर्नल आर. के नाम से पुकारा जाता है। आजकल हमारा विभाग एक बहुत खतरनाक मिशन पर काम कर रहा है। उस मिशन को हमने आपरेशन डैथ का नाम दिया है। तुम लोगों ने अखबारों में यह खबर जरूर पढ़ी होगी कि हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान परमाणु बम बना रहा है।
जी हां, हमने यह खबर पढ़ी है।
पाकिस्तान परमाणु बम बना रहा है, इस खबर ने हमें चिंता में डाल दिया था, लेकिन फिर भी हम खामोश थे, पर बीस दिन पहले हमारे एक जासूस ने, जो पाकिस्तान में रहकर हमारे देश के लिए जासूसी कर रहा है, रिपोर्ट भेजी है कि...
...बम तैयार होते ही पाकिस्तान भारत पर जबरदस्त हमला करेगा! उसने यह भी बताया है कि बम लगभग तैयार है। एक महीने बाद वह हमारे देश के किसी भी शहर पर आसानी से गिराया जा सकता है...
...इस खबर ने न सिर्फ मुझे और मेरे विभाग को, बल्कि पूरी भारतीय सेना और सरकार को बौखलाकर रख दिया है। रक्षा मंत्रालय ने फौरन एक मीटिंग बुलाई उसमें मेरे अलावा जनरल सीक्रेट सर्विस के चीफ मिस्टर अर्जुन-सिंह भी शामिल थे! मीटिंग में यह तय किया गया था कि पाकिस्तान जो बम तैयार कर रहा है, उसे अपने देश और देशवासियों की भलाई के लिए तैयार होने से पहले ही नष्ट कर दिया जाये...
...यह काम मेरे और मिस्टर अर्जुनसिंह के जिम्मे सौंपा गया था। हमारे जासूस की रिपोर्ट के अनुसार वह बम कराची से सौ किलोमीटर दूर एक छोटे से शहर हैदरपुर में तैयार किया जा रहा है। मैंने और अर्जुनसिंह ने उसी दिन अपना एक एजेन्ट पाकिस्तान रवाना कर दिया था। लेकिन कराची पहुंचते ही हमारा एजेन्ट मारा गया...

...तब से लेकर अब तक मेरे और सीक्रेट सर्विस के पांच-पांच बहादुर जांबाज एजेण्ट आपरेशन डैथ पर दुश्मन के हाथों मारे जा चुके हैं। अभी जो फोन आया था, वह भी आखरी एजेण्ट की मौत का था। इसलिए मैं चाहता हूं कि इस बार मैं पाकिस्तान अपने किसी एजेण्ट को न भेजकर तुम दोनों को भेजूं!
वाह! हम बिल्कुल तैयार हैं कर्नल अंकल! इस नेक कार्य में यदि हमारी जान भी चली जाये तो हमें परवाह नहीं है।
हां अंकल! बताइये, अब हमें यहां से कब रवाना होना है?
हमारे पास ज्याद समय नहीं है। बम तैयार होने में अब सि दस दिन रह गये हैं, इसलिए तुम दोनों आज ही रवाना हो जाओ तो अच्छ होगा।
ठीक है, लेकिन यह खबर आप अपने पाकिस्तान में जासूसी कर रहे जासूस को मत दीजिएगा, क्योंकि मुझे संदेह है कि वह गद्दार वह आपको डबल क्रॉस कर रहा है, आप लोगों ने अब तक जितने भी जासूस भेजे, दुश्मन को उनका पता चल गया और वह मार दिये गये।
हां, मैं भी यही बात सोच रहा था। इसीलिए अब पाकिस्तान पहुंचकर तुम लोगों को दो काम करने पड़ेंगे। पहला काम तो बम को नष्ट करना है। दूसरा काम होगा हमारे उस जासूस को चैक करना, अगर वह गद्दार है तो उसे खत्म कर देना।
ठीक है कर्नल अंकल, यह काम भी हो जायेगा। अब आप यह बताइये कि आपके एजेण्ट किस रास्ते से पाकिस्तान में प्रविष्ट होते थे?
हमारे और सीक्रेट सर्विस के एजेण्ट अलग-अलग रास्तों से बॉर्डर क्रॉस करके पाकिस्तान में घुसते थे।
हम भी बॉर्डर क्रॉस करके ही आयेंगे, लेकिन जमीन के रास्ते नहीं, बल्कि हवाई रास्ते से।
लेकिन हवाई रास्ते से देख लिये जाने का ज्यादा खतरा है।

कर्नल अंकल, हम
श्रीनगर वाले हवाई रास्ते
पाकिस्तान में प्रवेश करेंगे।
वहां भयानक ठण्ड
रही है। बर्फ भी गिर रही
इसलिए हमें देख
लिये जाने का खतरा
लगभग न के बराबर
होगा।
बस, आप फौरन
एक विमान का इन्तजाम
कर दीजिए, जो हमें पाकिस्तान
की सीमा में छोड़ आयेगा।
ठीक है, मैं अभी
इन्तजाम किये देता हूं।
इन्तजाम
हम जरा
होकर आते हैं।
कुछ खास
रखी हैं।
जाओ, एक
घण्टे बाद
सैनिक छावनी
पहुंच जाना। मैं
तुम लोगों को
वहीं काले नकाब
में मिलूंगा।
दोनों ने घर पहुंचकर
इमरजेंसी में काम आने वाले
अपने खुफिया हथियार लिये,
फिर सफेद पोशाकें पहनीं। उस
पर काली पोशाकें पहनीं...
...और एक घण्टे से पहले ही सैनिक
छावनी पहुंच गये।
हमें आने में देर
तो नहीं हुई
कर्नल अंकल।
नहीं, मैं
भी कुछ
ही देर पहले
आया हूं। आओ
चलें, विमान उड़ान
भरने के लिए
तैयार खड़ा
है।
राम-रहीम को लेकर रन-वे पर पहुंचे, जहां
जेट विमान खड़ा था।
यह पैकेट रख लो।
इसमें हमारे उस एजेण्ट का
फोटो और उसके घर का पता
और फोन नम्बर लिखा है।
साथ ही कुछ पाकिस्तानी
करेंसी भी है, जिसकी तुम
लोगों को वहां जरूरत
पड़ेगी।
अच्छा कर्नल अंकल,
अब इजाजत दीजिए।
जिंदगी रही तो फिर
मिलेंगे।

कर्नल साहब से आखिरी बार हाथ मिलाकर राम-रहीम विमान में सवार होने के लिए विमान की ओर चल पड़े।
जाओ मेरे देश के बहादुर लड़को, कामयाब होकर लौटना। देश को अभी तुम दोनों की बहुत जरूरत है, इसलिए अपना हर कदम बहुत सोच-समझकर उठाना।
फिर जैसे ही राम-रहीम विमान में सवार हुए, उसका दरवाजा बन्द हुआ इंजन गर्जा और फिर शीघ्र ही उसने रन-वे पर तेज दौड़ लगाते हुए धरती छोड़ दी।
मेरे देश की महान धरती, तुझे राम-रहीम का आखरी सलाम। हम मौत के सफर पर जा रहे हैं, पता नहीं फिर कभी तेरी खुशबू नसीब होगी या नहीं।
देखते ही देखते विमान आकाश में पहुंच गया और श्रीनगर की ओर बढ़ने लगा।
मिस्टर राम-रहीम, विमान के पिछले भाग में दो किट बैग, दो लाइट मशीनगन, दो रिवॉल्वर और दो शिकारी चाकू रखे हैं, उन्हें उठा लीजिए...
...किट बैग में हाथगोले, टाइम बम, फालतू गोलियां, पांच दिनों के लिए खाने का सूखा सामान और पानी की बोतलें रखी हैं।
वैरी गुड।
विमान अपनी तूफानी रफ्तार से बादलों का सीना चीरता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था।
मिस्टर राम-रहीम, हम श्रीनगर के ऊपर उड़ रहे हैं। अब आप लोग जम्प करने के लिए तैयार हो जायें। विमान कुछ ही देर बाद दुश्मन की सीमा में पहुंच जायेगा।
विमान दुश्मन की सीमा में पहुंच गया है। मैं इमरजेंसी डोर खोलने जा रहा हूं। आप लोग कूदने के लिए तैयार हो जाइये।
हम तैयार हैं।

अगले ही पल विमान का इमरजेंसी गेट खुला और राम-रहीम ने हवा में छलांग लगा दी।
विमान ने एक कलाबाजी खाई और पलटकर वापस चल दिया।
नीचे पहुंचने में उन्हें पूरे पच्चीस मिनट लगे।
रहीम, जल्दी से एक गड्ढा खोदो, ताकि यह पैराशूट और अपने काले कपड़े उतारकर उसमें दबा दें।
अभी खोदता हूं।
रहीम ने शिकारी चाकू से एक गड्ढा खोद दिया। राम ने अपना और उसका पैराशूट और काले कपड़े उतारकर उसमें डालकर उसे बर्फ से ढक दिया।
अब यह बताओ, चलना किधर है?
अंदाजे से आगे बढ़ना ठीक नहीं है। हम इन पहाड़ों में भटक सकते हैं। इसलिए नक्शा निकालकर देख लेते हैं, यही अच्छा रहेगा।
किट बैग से नक्शा निकालकर दोनों टॉर्च की रोशनी में उसका निरीक्षण करने लगे।
दुश्मन की चौकी नम्बर एक यहां से एक किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में है। हम उसी दिशा में चौकी से थोड़ा हटकर आगे बढ़ेंगे।
ठीक है।
उधर चौकी नम्बर एक का वायरलैस सैट एकाएक जाग उठा।
विक-विक-विक!

वायरलैस सैट के पास बैठे एक सैनिक ने फौरन हैडफोन कानों पर चढ़ाया।
हैलो-हैलो, कर्नल नूरखां कालिंग फ्रॉम रडार सेक्शन, ओवर!
हैलो-हैलो, मैं चौकी नम्बर एक से वायरलैस आपरेटर बोल रहा हूं जनाब! कहिए, क्या हुक्म है? ओवर!
चौकी इंचार्ज से फौरन बात कराओ। ओवर।
हैडफोन उतारकर वह सैनिक भागता हुआ एक कमरे में पहुंचा।
सर! रडार सेक्शन से एक मैसेज आया है। कर्नल नूरखां आपसे फौरन बात करना चाहते हैं।
ठीक है, चलो।
कुछ देर बाद—
हैलो! मैं चौकी नम्बर एक का इंचार्ज कर्नल जल्लाद बेग बोल रहा हूं, ओवर।
कर्नल बेग, अभी कुछ देर पहले भारतीय सेना का एक विमान हमारी सरहद में घुस आया था। इससे पहले कि हमारी एण्टी एयर-क्राफ्ट गनें उसे मार गिरातीं, वह वापस लौट गया...
...उसका इस तरह आना और वापस लौट जाना मुझे शक में डाल रहा है। उसने जरूर कुछ लोग हमारी सरहद में उतारे होंगे। तुम फौरन गश्ती सैनिकों की संख्या बढ़ा दो और उन्हें ऑर्डर दो कि चाहे जितनी भी ठण्ड पड़ रही हो या बर्फ गिर रही हो, सरहद के आसपास का इलाका अच्छी तरह चैक किया जाये। ओवर!
ओ.के. कर्नल, आप फिकर मत करें। अगर दुश्मन के आदमी हमारी सरहद में आ भी गये हैं तो वह हमसे बचकर नहीं जा पायेंगे। ओवर एण्ड आउट।
कर्नल जल्लाद बेग ने वायरलैस की फ्रीक्वेंसी बदली और गश्ती सैनिकों को ऑर्डर देने लगा।
सभी गश्ती दल होशियार हो जायें और गश्त पर निकल पड़ें। दुश्मन का एक विमान हमारी सरहद में अपने कुछ आदमी छोड़ गया है। उन्हें ढूंढ़कर गिरफ्तार कर लिया जाये या खत्म कर दिया जाये। तुम लोगों की मदद के लिए मैं और सैनिक भेज रहा हूं। ओवर!
कर्नल बेग का मैसेज मिलते ही सर्दी से बचने के लिए पहाड़ी गुफाओं में छुपे गश्ती सैनिक बाहर निकल पड़े।
भारत के लोग पता नहीं किस मिट्टी के बने होते हैं। इतनी भयानक ठण्ड पड़ रही है, ऊपर से बर्फ गिर रही है, फिर भी वे हमारी नाक में दम करने चले आये हैं।
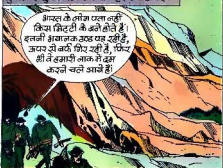
सैनिकों की वह टुकड़ी बातें करती हुई गश्त लगा
रही थी कि अचानक उनमें से एक सैनिक चौंककर
बोला—
यार जब्बार, मुझे उस ओर कोई हिलता-डुलता नजर आया था।
जरूर कोई भारतीय जासूस होगा,चलो, चलकर देखते हैं।
ऐसे नहीं, हम दो ग्रुप में बंट जाते हैं। एक ग्रुप दाईं ओर से आगे बढ़ेगा, दूसरा बाईं ओर से।
ठीक है।
उधर—
रहीम, लगता है, उन लोगों ने हमें देख लिया है। तभी वे हमारी ओर आ रहे हैं।
मेरे हाथों में तो खुजली होनी शुरू हो गई है।
अब खुजली मिटाने के अलावा हमारे पास कोई रास्ता भी तो नहीं है।
ठीक है, तो फिर तुम दाईं ओर वाली टुकड़ी का हिसाब-किताब करो, मैं बाईं वाली से निपटता हूं।
दोनों ने दायें-बायें जाकर उन सैनिकों को घेरकर
पोजीशन ली और फिर—
तड़-तड़-तड़
आह!
तड़... तड़... तड़...
उफ!
आह!
तड़... तड़... तड़...!
मर गया!
नहीं!
तड़... तड़... तड़...
आह!

गश्ती टुकड़ी का एक सैनिक चौकी नम्बर एक से सम्पर्क बना चुका था।
हैलो-हैलो, मैं गश्ती दल नम्बर पांच से जुबैर बोल रहा हूं। चौकी से दाईं ओर तीसरी पहाड़ी पर हमारी दुश्मन से मुठभेड़ हो गई है। उन्होंने हमारे दस साथी मार दिये हैं। फौरन मदद भेजी जाये। ओवर!
बहादुरी से मुकाबला करते रहो! मदद आ रही है। ओवर एण्ड आउट।
तड़-तड़-तड़
रहीम, अगर हम यहां ज्यादा देर रुके रहे तो फंस जायेंगे। जल्दी से सबका सफाया करो और यहां से फूट लो।
ठीक है, तो फिर निकालो हथगोले।
तड़-तड़-तड़
दोनों ने किट बैग से एक-एक हथगोला निकाला और-
अगले ही पल-
धड़ाम
धड़ाम
उफ!
आह!
रास्ता साफ होते ही राम-रहीम एक ओर भाग लिये।
लेकिन अभी वह मुश्किल से तीस-चालीस कदम ही भाग पाये होंगे कि-
तड़-तड़-तड़
तड़-तड़-तड़
ओह!
खबरदार! वहां हो, वहीं रुक जाओ। एक कदम भी आगे बढ़ाया तो भूनकर रख दिये जाओगे।
परन्तु राम-रहीम ने चेतावनी की परवाह न कर फौरन अपने आपको बर्फ पर गिरा दिया और-
तड़-तड़-तड़
तड़-तड़-तड़

तुम दोनों चारों ओर से घिर गये हो। मुकाबला करना बेकार है, इसलिए तुम्हारी भलाई इसी में है कि अपने आपको हमारे हवाले कर दो।
क्या ख्याल है राम भइया?
हम सचमुच चारों ओर से घिर गये हैं। हथियार डाल देने में ही भलाई है।
क्या ऽऽऽ?
बहस मत करना। जैसा मैं कहता हूं, फिलहाल वैसा ही करो।
और फिर —
गोली मत चलाना। हम अपने आपको तुम लोगों के हवाले कर रहे हैं।
अगले ही पल पाकिस्तानी सैनिकों ने उन्हें घेर लिया।
इनके किट बैग उतारकर ठीक से तलाशी लो।
तलाशी की क्या जरूरत है कैप्टन। हम अपने सारे हथियार खुद ही आप लोगों के हवाले किये दे रहे हैं।
दोनों ने बड़ी शराफत से किट बैग, रिवॉल्वर और शिकारी चाकू उन लोगों के हवाले कर दिये...
...फिर भी दो सैनिक आगे बढ़कर उनकी तलाशी लेने लगे।
लेकिन तलाशी में उन्हें कुछ नहीं मिला। उसके बाद पाकिस्तानी सैनिक उन्हें अपने घेरे में लेकर चौकी की ओर चल दिये।
हैलो! कैप्टन असलम स्पीकिंग! हमने दो भारतीय जासूसों को पकड़ लिया है। हम चौकी वापस आ रहे हैं। ओवर!
शाबाश कैप्टन असलम! ओवर एण्ड आउट!

बीस मिनट तक चलने के बाद वह लोग चौकी पहुंच गये।
ओह! तो यह हैं भारतीय जासूस! जरा इनकी सफेद पोशाक तो उतारो।
हुजूर कर्नल साहब! हम जासूस-वासूस कुछ नहीं हैं। हमारी सात पुश्तों में भी कभी कोई जासूस पैदा नहीं हुआ।
बको मत, चुपचाप खड़े रहो।
सैनिको! इनके कपड़े उतारो।
लेकिन इससे पहले कि कोई सैनिक आगे बढ़ता, राम-रहीम खुद ही अपनी पोशाकें उतारने लगे।
जनाब! आप हमारी उम्र और कद देखिए। क्या हम आपको जासूस नजर आते हैं!
अगर तुम लोग जासूस नहीं हो तो कौन हो? और हमारी सरहद में कैसे घुस आये?
हुजूर, मेरा नाम रहीम है। यह है मेरा दोस्त राम! हम दोनों हाईस्कूल में पढ़ते हैं। कल हम स्कूल से वापस लौट रहे थे, तभी एक कार हमारे पास आकर रुकी और हमें कार में खींच लिया गया...
...उसके बाद हम बेहोश हो गये। होश आया तो हम एक जहाज में सफर कर रहे थे। थोड़ी देर बाद जहाज का दरवाजा खुला। दो आदमियों ने हमें उठाकर नीचे फेंक दिया। वह दोनों भी हमारे पीछे जहाज से कूदे थे हुजूर! लेकिन फिर पता नहीं कमबख्त कहां गायब हो गये।
रहीम ने एक जोरदार मनगढंत कहानी सुना डाली, जिसे सुनकर राम मन ही मन मुस्करा उठा।
सर! मुझे तो यह छोकरे सच बोलते लग रहे हैं। यह जासूस नहीं हो सकते। इन्हें सिर्फ इसलिए भेजा गया है कि हमारा सारा ध्यान इन पर लग जाये और असली जासूस हमारी आंखों में धूल झोंककर बॉर्डर क्रॉस कर जायें।
लेकिन हम धोखा खाने वालों में से नहीं हैं...

...तुम फौरन सैनिक लेकर गश्त पर निकल जाओ। मैं दूसरे गश्ती दलों को भी खबर कर देता हूं, ताकि असली जासूस जल्द से जल्द पकड़ में आ जाये और गश्त जारी रखी जाये।
ओ.के. सर!
कैप्टन सैनिकों को साथ लेकर गश्त पर चला गया।
इन्हें बांधकर कोठरी में डाल दो। इनका फैसला मैं सुबह करूंगा।
बहुत अच्छा जनाब!
राम-रहीम को एक कोठरी में बन्द कर दिया गया।
रहीम, तुम्हारे झूठ बोलने से भी कोई फायदा नहीं हुआ। कोई ऐसा झूठ बोलते, जिससे कर्नल हमें छोड़ देता।
हम कोई भी झूठ बोलते, कर्नल हमें छोड़ने वाला नहीं था। फिर भी मेरे झूठ से थोड़ा-बहुत फायदा तो हमें हो ही गया है। सुबह तक के लिए तो पाकिस्तानी सैनिकों का ध्यान हमारी ओर से हट ही गया है। दूसरे कैप्टन और सैनिकों के गश्त पर जाने से चौकी से सैनिकों की संख्या भी कम हो गई है।
हुम्म! बहुत समझदार होते जा रहे हो।
फिर अब क्या इरादा है?
इरादा नेक है। हाथ-पैर के बंधन काटो और सुबह होने से पहले ही यहां से निकल चलो।
सैनिकों द्वारा तलाशी लेने के बाद भी राम-रहीम के पास कई गुप्त हथियार मौजूद थे। उन्हीं में से एक था उनकी बेल्टों में लगा तेज धार वाला ब्लेड, जिससे दोनों जल्दी-जल्दी अपने हाथ-पैरों के बंधन काटने लगे।
शीघ्र ही—
लो, हम आजाद हो गये। अब यह बताओ, बाहर खड़े सैनिकों को रास्ते से कैसे हटाया जाये?
फार्मूला नम्बर ५५ का इस्तेमाल करो।

अगले ही पल—
आह! मर गया! मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है। कुछ करो वरना मैं मर जाऊंगा!
अरे, कोई है। मेरा साथी पेट दर्द से मरा जा रहा है। इसे एक गिलास पानी और दर्द की एक गोली लाकर दो, वरना यह मर जायेगा।
आह, बहुत तेज दर्द है।
चाल कामयाब रही। फौरन दरवाजा खुला।
तेरा साथी पेटदर्द से मर रहा है तो उसे मरने दे। अगर तू चिल्लायेगा तो हम तुझे गोली मारकर खत्म कर देंगे।
सुन लिया। अब हमारे कान में तेरी आवाज न आये।
फिर दोनों पलटकर वापस जाने वाले थे कि तभी उनकी दृष्टि उनके बंधनमुक्त हाथ-पैरों पर पड़ी।
अरे, इनके हाथ और पैर तो आजाद हैं। कम्बख्तों ने किसी चीज से रस्सी काट ली है।
अभी मजा चखाता हूं मैं इन्हें।
परन्तु इससे पहले कि वह अपनी गन सीधी कर पाते, राम-रहीम ने उन पर छलांग लगा दी।
मजा तुम नहीं, हम तुम्हें चखायेंगे।
उफ!
ढिशुम
बिल्कुल असली बंगाली रसगुल्ले वाला मजा चखायेंगे हम तुम्हें।
आह!
धड़ाक!
एक सैकिण्ड से भी कम समय में उनकी गनें राम-रहीम के हाथों में आ गयीं।
अब तुम दोनों खामोश रहना। अगर मुंह से जरा भी आवाज निकाली तो भूनकर रख दूंगा।
हमारी गन वापस कर दो। तुम दोनों यहां से बचकर नहीं जा पाओगे।
बच्चो, हम यहां अपनी मर्जी से आये हैं। जायेंगे भी अपनी मर्जी से। दुनिया की कोई भी ताकत हमारा मार्ग नहीं रोक सकती।
सुनो, तुम लोग अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप यह बताओ कि कर्नल इस समय कहां होगा? अगर एक सैकिण्ड में जवाब नहीं दिया तो यह गन गोलियां उगलने लगेंगी।

कर्नल साहब बाईं ओर तीसरे कमरे में हैं।
शाबाश! तू बहुत अच्छा बच्चा है।
अगले ही पल—
धड़ाक
धड़ाक
आह!
उफ!
दोनों सैनिक वहीं ढेर हो गये तो...
...राम-रहीम उनके कपड़े उतारकर पहनने लगे।
कपड़े पहनकर वे कोठरी से बाहर आ गये।
कर्नल के पास चलने से पहले हमें किट बैग और हथियार भी लेने चाहिए।
हां, चलो!
फिर दोनों बाईं ओर वाले कमरे में घुस गये।
रहीम, किस्मत हमारा साथ दे रही है। हमारे किट बैग और हथियार अभी यहीं पड़े हैं।
अगर बेचारे पाकिस्तानी सैनिकों को यह मालूम होता कि हम आज़ाद होकर इन्हें उठाने आयेंगे तो वह...! ही-ही-ही!
उधर—
हैलो, मैं चौकी नम्बर एक से कर्नल जल्लाद बेग बोल रहा हूं। हमने भारतीय विमान से छोड़े गये दो लड़कों राम-रहीम को गिरफ्तार कर लिया है। उनका कहना है कि उनके साथ दो जासूस विमान से और कूदे थे...
...असली सैनिक उन दोनों जासूसों को तलाश कर रहे हैं। कामयाबी मिलते ही मैं फिर रिपोर्ट दूंगा। ओवर!
हम रिपोर्ट का इन्तजार करेंगे। ओवर एण्ड आउट।

कर्नल वायरलेस सैट बन्द करके हैडफोन उतार ही रहा था कि तभी दरवाजा एक झटके के साथ खुला।
ओह! तुम...?
यार कर्नल, तुम बिल्कुल बच्चे हो। मैंने तुम्हें जो गोली दी थी, उसे तुम अभी तक चूस रहे हो। हमारे साथ कोई जासूस-वासूस विमान से नहीं कूदा था। हम यहां अकेले ही आये हैं।
न... न कर्नल साहब, रिवॉल्वर निकालने की कोशिश हरगिज मत कीजिए, वरना रिवॉल्वर निकालने से पहले आपका दम आपके शरीर से बाहर निकल जायेगा।
कर्नल ने रिवॉल्वर की ओर बढ़ता हुआ अपना हाथ वापस खींच लिया।
त... तुम दोनों आजाद कैसे हो गये?
क्या करियेगा यह जानकर? फिलहाल तो अब आप यह देखिये कि हम इस चौकी से किस तरह नाइनप्लस दूर होते हैं।
राम ने आगे बढ़कर कर्नल के होल्स्टर से रिवॉल्वर खींच लिया।
अब आप हमें बाहर ले चलिए। ध्यान रहे, अगर आपने चिल्लाकर सैनिकों को बुलाने की कोशिश की तो आपका यह रिवॉल्वर आपके ऊपर चिल्लाने लगेगा।
कर्नल को कवर किये दोनों बिना किसी परेशानी के बाहर आ गये।
कर्नल साहब, गाड़ियां किधर खड़ी होती हैं?
उ... उ... उधर।
रहीम, मैं कर्नल को कवर किये हूं, तुम उधर से एक जीप ले आओ। सावधान रहना, गाड़ियों की सुरक्षा के लिए भी वहां कोई सैनिक जरूर होगा।
फिकर मत करो। अगर वहां कोई हुआ भी तो मैं उसे सम्भाल लूंगा।

कुछ देर बाद रहीम एक जीप लेकर आ गया।
कोई गड़बड़ तो नहीं हुई।
गड़बड़ क्या होती? एक सैनिक जीप में सो रहा था, मैंने उसे सोते में ही ऊपर पहुंचा दिया। फिर उसके शरीर को बाहर फेंका और जीप यहां ले आया। बस!
चलो बैठो जीप में।
फिर राम और कर्नल के बैठते ही रहीम ने जीप आगे बढ़ा दी।
कर्नल, आगे कई चौकियां पड़ेंगी। किसी चौकी पर होशियारी दिखाने की कोशिश मत कर बैठना, वरना समय से पहले ही तुम्हारा कन टू का कोर हो जायेगा।
रहीम जीप को तूफानी रफ्तार से दौड़ाता रहा। रास्ते में कई चौकियां पड़ीं, लेकिन जीप में कर्नल को बैठे देख उन्हें किसी ने भी रोकने की कोशिश नहीं की।
यह सड़क किस शहर को जाती है कर्नल!
यह सड़क मुल्तान शहर से आकर मिलती है।
मुल्तान से कराची कितनी दूर है?
तीन सौ किलोमीटर!
रहीम, मुल्तान शहर से कुछ पहले ही जीप रोक लेना। सुबह होने वाली है। जीप शहर में लेकर चलना ठीक नहीं होगा।
अच्छा!
रहीम ने मुल्तान से पांच किलोमीटर पहले ही जीप कच्ची सड़क पर उतार दी...
...और आगे पेड़ों की आड़ में ले जाकर रोक दी।
नीचे उतरिये कर्नल साहब। आपने हमें सही सलामत यहां तक पहुंचा दिया, इसके लिए आपका शुक्रिया तो अदा कर दें।

और जैसे ही कर्नल जीप से नीचे उतरा—
माफ करना कर्नल, मैं तुम्हें ऊपर भेज रहा हूं। अब तुम्हें वहां जन्नत मिले या दोज़ख, यह तुम्हारे नसीब के ऊपर है।
आह!
धड़ाक
रहीम के एक ही वार से कर्नल मुर्दा हो गया।
रहीम, हमें इस वर्दी, किट बैग और गनों से छुटकारा पा लेना चाहिए, क्योंकि यह चीजें हमें शहर में फंसवा सकती हैं।
ठीक है। रिवॉल्वर, शिकारी चाकू और दो-दो टाइम बम जेबों में डालकर बाकी सब चीजें यहीं छोड़ देते हैं।
रहीम ने कर्नल की लाश के साथ बाकी सामान को भी झाड़ियों में छुपा दिया और थोड़ी देर बाद दोनों पैदल ही शहर की ओर चले जा रहे थे।
जिस समय राम-रहीम मुल्तान शहर की सीमा में प्रविष्ट हुए, उस समय सुबह हो चुकी थी।
राम भइया, वह देखो। सामने एक ढाबा है। वहां कई ट्रक भी खड़े हैं। चलो, वहां चलकर नाश्ता करते हैं। अगर कोई ट्रक कराची जा रहा होगा तो उस पर चढ़ लेंगे।
ठीक है, चलो।
दोनों उस ढाबा टाइप होटल में पहुंचे।
चचामियां, दो गर्मागर्म चाय और चार पीस मक्खन लगाकर भिजवा दीजिए।
अभी भिजवाता हूं बरखुर्दार! आप बैठिये तो सही!
तभी बेंच पर बैठा एक व्यक्ति बोला—
गफूर चाचा, मैं आज ट्रक लेकर कराची जा रहा हूं। वहां से कुछ मंगाना हो तो बोलो।
अपनी चाची के लिए एक शाल ले आना।
???

रहीम, चाय जल्दी खत्म करो। हम इसी आदमी के ट्रक पर करांची चलेंगे।
मैं भी यही सोच रहा हूं।
उस व्यक्ति के उठते ही राम-रहीम ने बूढ़े को पैसे दिये और उसके पीछे लग गये।
पता नहीं इसका कौन-सा ट्रक है?
चुपचाप इसके पीछे चलते रहो, अपने आप पता चल जायेगा।
एक ट्रक में सवार हो
आओ रहीम, हम ट्रक की साइड से ऊपर चढ़ जायें।
ठीक है, चलो।
फिर इससे पहले कि ट्रक आगे बढ़ता, राम-रहीम साइड में बंधे रस्से को पकड़कर झूल गये।
रहीम, करांची पहुंचकर पता नहीं कब सोना नसीब हो, इसलिए मौका है, जमकर सोलो।
हां, ट्रक को करांची पहुंचने में कम से कम पांच-छः घण्टे लगेंगे। तब तक हम एक अच्छी नींद ले सकते हैं।
थके हुए थे, अतः लेटते ही इन्हें नींद
खर्र...खर्र...र।
खर्र...खर्र...र...।
उधर चौकी पर—
हैलो, मैं चौकी नम्बर एक का वायरलैस आपरेटर बोल रहा हूं। जिन लड़कों को रात में पकड़ा गया था, वह कर्नल साहब को लेकर एक जीप में फरार हो गये हैं। ओवर!
ओह! तुम सब लोग गोली मार देने लायक हो। वो छोकरे तुम लोगों को चूना लगा गये और तुम लोग सोते रहे...

...खैर, बोलो बचकर कहां जायेंगे? मैं अभी मुल्तान और करांची रिपोर्ट भेज देता हूं, ताकि वह जहां भी जायें, गिरफ्तार कर लिये जायें। ओवर।
अब मेरे लिए क्या हुक्म है जनाब? ओवर।
कैप्टन गश्त से वापस आये तो मुझसे बात करवाओ। और हां, उम्मीद तो नहीं कि उन लड़कों ने कर्नल को जिंदा छोड़ा होगा, फिर भी अगर वह जिंदा हैं और चौकी लौटकर आयें तो उन्हें हैडक्वार्टर भेज देना, यहां उनका कोर्ट मार्शल किया जायेगा। ओवर।
ओ.के. सर! मैं कैप्टन और कर्नल के आते ही उन्हें आपका मैसेज दे दूंगा। ओवर एण्ड आउट
उधर राम-रहीम की नींद तब खुली, जब ट्रक एक झटके के साथ रुक गया।
ची--ची--ची।
राम, लगता है, हम करांची पहुंच गये हैं। बाहर चारों तरफ निगाह मारकर देखो। यदि रास्ता साफ हो तो यहीं नीचे उतर लिया जाये।
राम भइया, दूर तक गाड़ियों की लाइन लगी हुई है। लगता है, सीमा पर गाड़ियों की तलाशी ली जा रही है।
इसका मतलब, हमारे आने की खबर हमसे पहले ही करांची पहुंच गई है। अतः हमें फौरन यह ट्रक छोड़ देना चाहिए।
हां, ट्रक छोड़ देने में ही हमारी भलाई है लेकिन कुछ देर ठहरो। कुछ लोग इधर ही आ रहे हैं।
कुछ देर बाद जब वे ड्राइवर लोग पास से गुजर गये—
आ जाओ राम भइया, अब रास्ता साफ है।

एक से तो उतर आये। अब यह बताओ, शहर कैसे पहुंचा जाये। सीमा पर तो तलाशी ली जा रही है।
मेरे ख्याल से हमें कच्चे रास्ते से आगे बढ़ना चाहिए। इस तरह हम सीमा पर खड़े सैनिकों की नजरों में आये बिना शहर पहुंच जायेंगे।
दोनों सड़क छोड़कर खेतों में घुस गये।
और एक लम्बा चक्कर लगाकर शहर की ओर बढ़ने लगे।
जैसे ही कोई होटल नजर आये, फौरन उसमें घुस चलो। पहले जमकर पेट पूजा करेंगे फिर आगे बढ़ेंगे।
शीघ्र ही—
वह रहा एक होटल। चलो, वहीं चलते हैं।
HOTEL
SANTOR
फिर एक टैक्सी पकड़ी और हैदरपुर चल दिये।

दो घण्टे बाद टैक्सी हैदरपुर के एक होटल के सामने जा रुकी।
आज रात हम होटल में आराम करते हैं। सुबह देखेंगे कि सैनिक छावनी कहां है और उसमें कैसे घुसा जा सकता है।
ठीक है!
टैक्सी का किराया देकर दोनों होटल में प्रविष्ट हो गये...
...और वहां एक कमरा लेकर ठहर गये।
सुबह नाश्ता करके राम-रहीम होटल से निकल पड़े। एक घण्टे बाद दोनों ऐसी सड़क पर खड़े थे, जो सैनिक छावनी की ओर जाती थी।
सावधान! आगे सैनिक छावनी है। इस सड़क पर आम आदमी का आना-जाना सख्त मना है। आज्ञा से छावनी इंचार्ज
इस बोर्ड को देखकर मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है।
कैसा आइडिया?
रहीम ने उसे अपना आइडिया बता दिया।
वाह रहीम! जवाब नहीं तेरे दिमाग का। क्या आइडिया ढूंढकर लाया है तू। कभी-कभी तो तेरा दिमाग वास्तव में किसी गधे से भी तेज दौड़ता है।
ऊंह! उपमा दी भी तो एक गधे की। खैर, तो क्या शुरू कर दें अपना काम?
दोनों ने कुछ बड़े-बड़े पत्थर बीच सड़क पर डाले, फिर सड़क के किनारे खड्ड में छुप गये।
यार रहीम, मजा तो तब है, जब पहली गाड़ी शहर की ओर से ही आये और कोई बड़ी गाड़ी आये।
हां, अपना मतलब छोटी गाड़ी से हल होने वाला नहीं है।

लगभग एक घण्टा इन्तज़ार करने के बाद —
तैयार रहना राम भइया, जैसे ही कोई ट्रक से पत्थर हटाने के लिए उतरेगा। हमें ट्रक पर सवार हो जाना है।
ऊपर नहीं, ऊपर की तलाशी ली जा सकती है! हम ट्रक के नीचे छिपेंगे।
यह बात तो ठीक है।
कुछ ही पलों बाद—
अब्दुल! यह पत्थर रास्ते से हटाओ! पता नहीं किस कम्बख्त ने इन्हें बीच सड़क पर डाल दिया है!
अभी हटाता हूं।
जितनी देर में अब्दुल नाम के सैनिक ने पत्थर हटाये, उतनी देर में राम-रहीम उसकी और ड्राइवर की नजर बचाकर ट्रक के नीचे घुस गये।
र ट्रक वहां से चल दिया।
दस मिनट बाद ट्रक छावनी के बैरियर पर पहुंचकर रुका। वहां खड़े सैनिकों ने ट्रक की तलाशी ली और —
ठीक है, जाओ!

ट्रक एक लम्बा रास्ता तय करता हुआ एक छावनी में आकर रुका। वहां पहले से काफी सैनिक ट्रक खड़े थे।
तब ड्राइवर और सैनिक वहां से चले गये।
रहीम, मेरे ख्याल से अभी हमें यहीं छुपे रहकर रात होने का इन्तजार करना चाहिए, क्योंकि रात के अंधेरे में ही हम अपना काम कर पायेंगे।
हां, इस समय हम आसानी से देखे जा सकते हैं।
दोनों ने ट्रक के नीचे छिपे रहकर ही समय बिताया और रात के दस बजते ही बाहर निकले।
रहीम, दबोच लो इन दोनों को। इनसे यहां के बारे में पूछताछ भी कर लेंगे और इनकी वर्दी भी उतार लेंगे।
चलो, फिर देर किस बात की है।
दोनों दबे पांव सैनिकों के पीछे पहुंचे और—
क... कौन?
चुपचाप गन हमारे हवाले कर दो और हमारे साथ गैराज में चलो।
मुंह से आवाज निकालने की कोशिश मत करना, वरना गोली अन्दर होगी और दम बाहर।
राम-रहीम रिवॉल्वर की नोक पर सैनिकों से गन लेकर उन्हें ट्रक में ले आये।
यहां बम किस इमारत में तैयार किया जा रहा है? सच बोलना, वरना...!
यहां से एक किलोमीटर दूर दाईं ओर एक लाल रंग की इमारत है। बम उसी में तैयार किया जा रहा है।
अब तू बोल, वहां की सुरक्षा का क्या इन्तजाम है?
वहां की हिफाजत के बहुत कड़े इन्तजाम हैं। गेट पर हर समय आ सैनिक खड़े रहते हैं। वहां छावनी के कुछ ही अधिका जा सकते हैं। किसी और वहां जाने की इजाजत नहीं है।

सैनिकों से कुछ और जानकारी लेकर राम-रहीम ने उन्हें बेहोश कर दिया।
खटाक!
खटाक!
आह!
उफ!
रहीम, इन्हें सिर्फ बेहोश करने से ही काम नहीं चलेगा। अगर इन्हें जल्दी होश आ गया तो यह हमारा सारा खेल चौपट कर देंगे।
ठीक है, तो फिर मैं इन्हें ऊपर पहुंचा देता हूं!
राम-रहीम ने पहले इन दोनों सैनिकों का गला घोंटकर उन्हें मारा, फिर उनकी वर्दी उतारकर पहन ली।
इन लाशों को यहीं ट्रक में पड़ी रहने देते हैं, यहां जल्दी ही किसी की नजर इन पर नहीं पड़ेगी।
हां, यही ठीक रहेगा।
लाशों को ट्रक में छोड़कर दोनों ट्रक से उतरे और दाईं ओर बनी लाल इमारत की ओर बढ़ने लगे।
राम भइया, तेज चलो। हमें सुबह से पहले हर हालत में अपना काम करके यहां से निकल जाना है।
यह रफ्तार बिल्कुल ठीक है, ज्यादा तेज चलने से किसी को हम पर शक हो सकता है।
स मिनट बाद—
सैनिक ठीक कह रहा था। इमारत के पीछे पहरा नहीं है।
अगर इन लोगों को मालूम होता कि हम इतनी आसानी से इनकी छावनी में घुस आयेंगे तो यह इमारत के पीछे क्या, कदम-कदम पर पहरा लगा देते।
अगले पल—

दोनों को छत पर पहुंचने में कोई परेशानी नहीं हुई।
रहीम, हमारे पास चार टाइम बम हैं, हम चारों बम इमारत के चार कोनों पर फिट कर देंगे, ताकि बम फटें तो इस इमारत के साथ इसमें तैयार किया जा रहे परमाणु बम का भी नामो-निशान मिट जाये।
ठीक है! इस समय रात के ग्यारह बजे हैं। हम टाइम बमों में दो बजे का टाइम सैट करेंगे, ताकि इस बीच हम यहां से दूर निकल जायें।
राम-रहीम सीढ़ियां उतरकर नीचे पहुंचे। वहां उन्हें एक दरवाजा दिखाई दिया।
चलो, पहले उसी कमरे को चैक करते हैं।
हम बिल्कुल ठीक जगह पर आये हैं रहीम! अन्दर बम तैयार किया जा रहा है।
ठीक है। तो फिर हम चारों टाइम बम इस हॉल के आस-पास फिट कर देते हैं।
फिर राम-रहीम चारों टाइम बम हॉल के आस-पास फिट करके...
...बाहर आ गये।
अब यह बताओ, छावनी से बाहर कैसे निकला जाये। हमारे पास ज्यादा टाइम नहीं है। तीन घण्टे के अन्दर-अन्दर हमें हर हालत में यहां से दूर निकल जाना है।

मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है। हम यहां से वापस ट्रक में चलते हैं! वहां खड़े ट्रकों का पेट्रोल निकालकर हम चारों ओर फैलाकर आग लगा देंगे। सबका ध्यान आग बुझाने में लग जायेगा और हम मौका पाकर यहां से निकल जायेंगे।
गुड आइडिया! चलो, हमें फौरन काम शुरू कर देना चाहिए।
मैदान में पंहुचकर दोनों ने ट्रकों का पेट्रोल निकालकर चारों ओर फैलाया...
...और फिर पेट्रोल की एक रेखा-सी खींचते हुए मैदान से काफी दूर तक गये।
अब देर न करो रहीम। जल्दी से पेट्रोल की इस रेखा में आग लगाओ और यहां से फूट लो।
ठीक है। तो फिर लो।
लाइटर की लौ जैसे ही पेट्रोल की रेखा से टकराई, पेट्रोल ने आग पकड़ ली।
आग पलक झपकते ही मैदान में खड़े ट्रकों तक पहुंच गई और—
अब निकल चलो यहां से। जल्दी ही यह जगह सैनिकों से घिर जायेगी।
धड़ाम!
धड़ाम!
तुरन्त छावनी में हंगामा मच गया।
आग-आग!

आग बहुत भयानक लगी थी, इसलिए वहां मौजूद लगभग सभी सैनिक आग बुझाने की कोशिश करने में जुट गये।
बालू की बोरियां लाओ।
अरे आग बुझाने वाली गैस का प्रयोग करो।
यह आग ज्यादा नहीं फैलनी चाहिए, वरना छावनी तबाह हो जायेगी।
हर सैनिक घबराया हुआ-सा था। उसी घबराहट का फायदा उठाते हुए राम-रहीम छावनी से बाहर की ओर चल पड़े।
बाहर आकर—
अब हमें दौड़ लगा देनी चाहिए। हमारे पास ढाई घण्टे बचे हैं। इतनी देर में हम यहां से जितनी दूर निकल जायेंगे, उतना ही अच्छा होगा।
तो फिर शुरु करो ओलम्पिक की दौड़।
और फिर दोनों ने ओलम्पिक चैंपियनों वाली दौड़ लगा दी।
हमें सुबह से पहले हैदराबाद से बाहर निकल जाना है, वरना परमाणु बम नष्ट होते ही पाकिस्तानी सेना यह शहर सील कर देगी।
दौड़कर तो हम इस शहर से बाहर निकलने से रहे। इसके लिये हमें किसी गाड़ी का प्रयोग करना होगा।
छावनी से पांच-छः किलोमीटर दूर निकल आने के बाद राम-रहीम ने एक बंगले से मोटर साइकिल चुरा ली।
राम भइया, जल्दी पीछे बैठो।

राम के बैठते ही रहीम ने मोटरसाकिल की गति फुल कर दी।
रहीम, मोटरसाइकिल और तेज चलाओ। दो बजने में सिर्फ दो घण्टे रह गये है।
रहीम ने मोटरसाइकिल की रफ्तार और बढ़ा दी और ठीक उस समय, जब वह शहर की सीमा से बाहर निकल रहे थे, वातावरण में एक कान फाड़ देने वाला धमाका हुआ।
धड़ाम
वो मारा, हम अपने मिशन में कामयाब हो गये। हमारे देश के ऊपर से खतरा टल गया है।
कराची पहुंचकर राम-रहीम ने मोटरसाइकिल छोड़ दी और उस जासूस के घर पहुंचे, जो भारतीय सेना के लिए पाकिस्तान में रहकर जासूसी कर रहा था।
कौन हो तुम लोग और यहां कैसे आये?
मेरा नाम राम है।
और मैं रहीम हूं।
उसके बाद राम-रहीम और उस जासूस के बीच कोड का आदान-प्रदान हुआ।
मिस्टर अकरम, हम आपरेशन डैथ पर यहां आये थे। हम अपने मिशन में कामयाब हो गये हैं। तुमने भी विस्फोट की आवाज सुनी होगी।
हां, सुनी है। अब तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो?

कर्नल आर. ने हमसे कहा था कि तुम हमारी हर तरह से मदद करोगे। हम आज ही भारत पहुंचना चाहते हैं। कोई इन्तजाम कर सकते हो तो कर दो।
फिक्र मत करो, इन्तजाम हो जायेगा। मैं आज ही तुम लोगों को भारत पहुंचवा दूंगा।
थोड़ी देर बाद –
लो, तुम दोनों नाश्ता करो। तब तक मैं तुम लोगों को भारत भिजवाने का कोई इन्तजाम करता हूं।
ठीक है।
राम-रहीम को नाश्ता देकर अकरम सीधा बाथरूम में पहुंचा।
हैलो सर। परमाणु बम भारत के दो लड़कों राम-रहीम ने नष्ट किया है। इस समय दोनों मेरे घर में हैं। मैं उन्हें बातों में लगाये रहूंगा। आप फौरन उन्हें गिरफ्तार करने के लि‍ए फोर्स भेजिये।
ठीक है। हम फोर्स भेज रहे हैं। तुम उन्हें किसी भी हालत में जाने मत देना। ओवर एण्ड आउट!
उसी समय बाथरूम का दरवाजा खुला!
क्यों? दे दी अपने बाप को हमारे यहां होने की खबर।
हैं! त... तुम?
गद्दार, तेरे ही कारण हमारे देश के दस देशभक्त जासूस मारे गये। अब हम तुझे भी जिंदा नहीं छोड़ेंगे।
व... वह...!

उसकी पोल खुलते देख अकरम ने रिवॉल्वर निकालना चाहा, लेकिन राम-रहीम ने उसे इसका मौका नहीं दिया।
धायं...!
धायं...!
आह!
उसके बाद---
रहीम, जल्दी से घर की तलाशी लो। अकरम के पास मेकअप बॉक्स जरूर होगा।
हां, होना तो चाहिए।
दोनों फटाफट घर की तलाशी लेने लगे।
एक अलमारी में उन्हें मेकअप बॉक्स मिल गया।
अब फूट लो यहां से। पाकिस्तानी फोर्स हमें गिरफ्तार करने आती ही होगी।
अकरम के घर से निकलकर राम-रहीम एक पार्क में पहुंचे। झाड़ियों की आड़ में बैठकर दोनों ने जेब से दो पासपोर्ट निकाले और उनमें लगी फोटो देखकर अपना मेकअप करने लगे।

दस मिनट बाद—

वाह! अब कोई यह नहीं कह सकता कि हम पैदायशी अमरीकन नहीं हैं।

चलो, अब एयरपोर्ट चला जाये।

रास्ते में दोनों ने दो बैग और कुछ कपड़े खरीदे और एयरपोर्ट पहुंच गये।

अमरीका से हमें भारत पहुंचने में कोई परेशानी नहीं होगी।

आधे घण्टे बाद वह एक अमरीकन विमान में बैठे अमरीका की ओर उड़े चले जा रहे थे।